International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

संग्रहालय प्रदर्शनी : एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. श्याम प्रकाश (गोल्ड मेडलिस्ट)
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
इतिहास विभाग, डॉ. श्यामा प्रसाद मुख़र्ज़ी विश्वविद्यालय, राँची, झारख़ण्ड

शोध–सारांश

संग्रहालय प्रदर्शनी, संग्रहालय जनसम्पर्क का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रदर्शनियों का आयोज़न दुर्लभ प्रदर्शों को आम–जनमानस तक पहुँचाने के लिए किया जाता है। कभी–कभी अलग–अलग भारतीय संग्रहालय अथवा विदेशी संग्रहालयों से भी प्रदर्शों अथवा कला–वस्तुओं को मंगाकर प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जाता है। प्रदर्शनियाँ वस्तुतः तीन प्रकार – स्थाई, अस्थाई एवं सचल प्रकार की होती हैं। सभी का अपना अलग–अलग महत्व है। संग्रहालय के क्रिया कलापों में प्रदर्शों को प्रदर्शित करने की अनेक विधियाँ भी बतायी गई हैं जिन्हें प्रदर्शनी प्रबन्धन भी कहा जा सकता है। संग्रहाध्यक्ष, संग्रहपाल, रूप–सज्जाकार आदि मिलकर किसी भी प्रकार की प्रदर्शनी के प्रबन्धन (मैनेज़मेन्ट) का कार्य देख़ते हैं। इसमें आय–व्यय से लेकर स्थान, प्रकाश, शो–केस, नाम–पत्र आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत एवं विश्व के सुप्रसिद्ध संग्रहालयविदों की पुस्तकों एवं उनके संदर्भों के आधार पर प्रदर्शनियों के विभिन्न प्रकारों उनमें संचालित क्रिया–कलापों, उनके गुण–दोषों सहित संग्रहालय प्रदर्शनी प्रबन्धन से सम्बन्धित तथ्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। यह शोध–पत्र संग्रहालय विज्ञान में कार्य करने वाले शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

शोध–सार

संग्रहालय के **शैक्षणिक कार्यों का प्रमुख़ माध्यम प्रदर्शनियाँ हैं।** ये कई प्रकार की हो सकती हैं यथा–जन साधारण के लिए प्रदर्शित संग्रहालय का ही स्थायी संग्रह या थोड़े समय के अन्तराल पर बदलती हुई प्रदर्शनियों के कार्यक्रम के अन्तर्गत किसी विषय के विशेष पहलू को स्पष्ट करने के लिए आयोज़ित प्रदर्शनी या किसी विशिष्ट कला–शैली की जटिलताओं को समझाने के लिए उसकी प्रक्रियाओं की प्रदर्शनी। **अस्थायी प्रदर्शनियों** में **प्रदर्शित होने वाली वस्तुएँ संग्रह सम्पत्ति हो सकती हैं या अन्य संग्रहों** से मंगायी जा सकती हैं। **इस प्रकार प्रदर्शनियाँ सभी के देख़ने, मनोरंजन तथा ज्ञानवर्द्धन के लिए होती हैं** जिन्हें लोग अपनी रुचि के अनुसार देख़ते हैं। प्रदर्शित विषय में अपनी रुचि अनुसार कोई सरसरी निगाह से देख़ते हैं तो कोई **गहरा अध्ययन** करते हैं, बहुत से ऐसे लोग भी हैं जो संग्रहालयों के सामान्य **शैक्षणिक कार्यक्रमों** जैसे–**भाषण, प्रदर्शन** आदि में भाग नहीं लेते ऐसी **प्रदर्शनियों** को देख़ते हैं तथा ज्ञानार्जन करते हैं।

किसी वस्तु विशेष को किसी निर्दिष्ट स्थान पर एक निश्चित समय–सीमा के अन्दर जन–अवलोकनार्थ प्रस्तुत करने की क्रिया को प्रदर्शन अथवा प्रदर्शनी कहा जाता है।

यदि ध्यान से देख़ा जाये तो जीवन के प्रायः हर क्षेत्र में हमें प्रदर्शन परिलक्षित होता है। **नये वस्त्र, नये आभूषण, अलंकरण, नये आधुनिकतम विधि से सजे घर के अन्दर की साज़–सज्ज़ा आदि अनेक दैनिक क्रियाकलापों में कदम–कदम पर हर क्षण प्रदर्शन** क्रिया लगातार चलती रहती है किन्तु संग्रहालयों के सन्दर्भ में यही प्रदर्शन क्रिया का अर्थ और उपयोग दोनों ही बदल जाते हैं क्योंकि **संग्रहालयों का लक्ष्य, संग्रहीत प्रदर्शों के माध्यम से उनके गुण, उनकी प्राचीनता,** उनकी कलात्मक एवं कठिन निर्माण शैली तथा अधिक मात्रा में अनुपलब्ध होने की स्थिति में उनकी विशिष्टता का ज्ञान, उन पर किये गए **अनुसन्धानात्मक तथ्यों द्वारा जनसाधारण** को उपलब्ध कराना है।

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में प्रदर्शित प्रदर्श अथवा कलाकृतियाँ

इस प्रकार प्रदर्शनी के द्वारा संग्रहालय किसी विशेष विषय से जुड़े वास्तविक प्रदर्शों से सम्बन्धित संरचना को सम्प्रेषित करते हैं और सामान्य दर्शकों में ज्ञान और उत्साह का संचार करते हैं। अन्य शब्दों में कहा जाय तो संग्रहालय की सर्वश्रेठ विधि 'प्रदर्शनी' है, अतएव प्रदर्शनी संग्रहालय का विशिष्ट माध्यम है।[1] ***एक निश्चित स्थान पर विषय वस्तु से सम्बन्धित प्रदर्शों को अपने सहायक तत्त्वों के साथ प्रदर्शित कर सम्यक ज्ञान उपलब्ध कराने की प्रक्रिया का नाम 'संग्रहालय प्रदर्शनी' है*** जो **स्थाई रूप से दर्शकों** के लिए **संग्रहालय में प्रदर्शित** की जाती है। इस प्रकार की **स्थाई प्रदर्शनी** संग्रहालयों में दर्शकों के अवलोकन के लिए वर्ष–पर्यन्त प्रदर्शित रहती हैं।

स्थाई प्रदर्शनी

पिछले कुछ दशकों के दौरान विश्व के समस्त संग्रहालयीय विचारधारा के लोग यह अनुभव करने लगे हैं कि **प्रदर्शनियाँ अथवा प्रदर्शन जन सम्प्रेषण के प्राथमिक माध्यम हैं।** आज यह सामान्यतः स्वीकार किया जाता है कि प्रदर्शनियाँ जन–सामान्य तक पहुँचने के सर्वाधिक प्रभावशाली साधन हैं, फिर चाहे **उनका आयोजन संग्रहालय के अपने संग्रह द्वारा** किया गया हो अथवा अन्य स्रोतों से प्राप्त वस्तुओं द्वारा यह सभी संग्रहालयों द्वारा स्वीकार्य है कि **प्रदर्श अथवा कला–वस्तुओं के प्रभावपूर्ण प्रदर्शन** के लिए समुचित स्थान अनिवार्य है।

जहाँ प्रदर्श वीथियों में रखे होते हैं वहीं स्थाई प्रदर्शनी का स्थान होता है। प्रदर्शों को वहाँ शो केस में रखा जाता है इससे न तो उसे निकाला जा सकता है, न प्रदूषित किया जा सकता है और न ही चुराया जा सकता है। संग्रहालय कर्मियों का धर्म है कि दर्शकों को उन प्रदर्शों के विषय में विरासत का सहारा लेकर इस प्रकार प्रभावित करें कि प्रदर्श उनके लिए इतना प्रिय हो जाये जितना कि सिनेमा। **मानव प्रकृति है कि वह अपने पुरखों की प्रशंसा और उनकी थाती से जुड़ने का प्रयत्न करता है।** इस ओर थोड़ा उत्प्रेरित करने के बाद स्वतः दर्शक का खिंचाव प्रदर्शों की ओर हो जायेगा। **कभी कभी प्रदर्शों में किंचित फेरबदल भी करना चाहिए क्योंकि एक ही प्रदर्श बार–बार देखने से मन ऊबने लगता है।** अतः नवीनता बनाये रखनी चाहिए।[2]

कलाकृतियों अथवा प्रदर्शों को बार–बार प्रदर्शित करते रहने से एक तो उनके क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना बनी रहती है दूसरे स्थाई रूप से प्रदर्शन कक्ष में स्थापित रहने देने से प्रकाश एवं वातावरण का भी दुष्प्रभाव प्रदर्शों पर पड़ सकता है। **पुनः शोध एवं प्रदर्शनी कार्यों हेतु इन प्रदर्शों के बार–बार स्पर्श करने अथवा उलटने–पलटने से भी इनके क्षतिग्रस्त होने की सम्भावना रहती है।** संग्रहालय–कर्मियों द्वारा एक ही समय में प्रदर्शनी को अधिक से अधिक सफल बनाने हेतु अधिक संख्या में प्रदर्शों का प्रदर्शित किया जाना भी प्रदर्शनी को प्रभावित करता है। प्रदर्शन करने की **दो विधियाँ** बताई गई हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में प्रदर्शित अवलोकितेश्वर प्रतिमा

स्थाई प्रदर्शन की दो विधियाँ

प्रथम प्रदर्शन विधि व्यवस्था का उद्देश्य **विषय–वस्तु तथा तकनीकी विधियाँ होती हैं, जो सामान्य दर्शकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सुसज्जित होती हैं** जो उनमें कौतूहल, जिज्ञासा उत्पन्न कर ज्ञान का संचार करने में सहायक तत्त्व सिद्ध होती हैं। इस योजना का प्रारूप इस प्रकार निर्धारित कर क्रियान्वित किया जाना चाहिए जिससे कि एक **सामान्य दर्शक (अर्थात निरक्षर अर्ध–शिक्षित, संस्कृति विहीन अथवा बाल दर्शक)** भी **संग्रहालय भ्रमण** के पश्चात कुछ समझने में सक्षम हो सकें। इस हेतु **प्रदर्शों को क्रमवार प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक उद्देश्यों** के अनुसार प्रबन्धित किया जान चाहिए।[3]

प्रदर्शों से सम्बन्धित पाठ्य सामग्री को भी साधारण, रूचिकर संक्षिप्त बनाने के साथ–साथ **ऐसे स्थान पर प्रस्तुत करना चाहिए जहां आम दर्शक की दृष्टि उस पर पड़े** और उसके मन में उठी जिज्ञासाओं का समाधान भी स्वयं से हो सके। **साधारणतया प्रदर्शों को संग्रहालयों में प्रदर्शित करने की विधि में आम–दर्शकों की सुविधा–असुविधा का ध्यान कम तथा संग्रहालयकर्मियों द्वारा अपनी विद्वत्ता एवं पाण्डित्य का समावेश अधिक किया जाता है** जो कि संग्रहालय प्रदर्शों के लिए दोष पूर्ण है।[4] ध्यान रहे, मात्र प्रदर्श स्वयं से तो **दर्शकों की कल्पनाशीलता को उत्प्रेरित नहीं कर सकते** इस दृष्टि से दर्शकों को किसी भी प्रदर्श के सम्बन्ध में समुचित ज्ञान उपलब्ध कराने हेतु हमें **प्रदर्शों की स्थापना** के साथ–साथ **संग्रहालयों में ऐसे शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन भी करना चाहिए** जिनके माध्यम से दर्शक उन प्रदर्शों को देखकर जागरुक बने एवं अपने चारों तरफ़ **मानवीय क्रियाकलापों को समझने** हेतु प्रेरित भी हो सकें।[5]

प्राथमिक प्रदर्शन प्रविधि का प्रथम दृष्टया यह लाभ होगा कि सामान्य कोटि के दर्शक के मन में प्रदर्शित प्रदर्शों को देखकर कौतूहल उत्पन्न होता है और उनके अनेक प्रश्नों के उत्तर भी इन प्रदर्शों से प्राप्त हो जाते हैं। धीरे–धीरे जब वे अन्य प्रदर्शों को देखते, समझते हैं तो उन्हें और अधिक आनन्द की प्राप्ति होती है। हमें इस बिन्दु पर गम्भीरता से विचार करना होगा कि आखिरकार संग्रहालयों में प्रदर्शों की विधिवत प्रदर्शनी का औचित्य क्या है, **संग्रहालय अधिकारियों एवं कर्मियों की यही मूल भावना होती है कि दर्शकों में जिज्ञासु–प्रवृत्ति का उदय एवं उनका समाधान हो सके।** संग्रहालय भ्रमण के पश्चात दर्शकों के मन में किसी प्रकार के विरोधाभास अथवा भ्रम की स्थिति न रह जाय और वे अपने **निजी अनुभवों एवं साक्षात्कार** से एक स्वतन्त्र, समुचित निष्कर्ष निकालने में सक्षम हो सकें, ऐसा किस प्रकार हो सकता है, इस हेतु उन बिन्दुओं को तलाशने की आश्यकता है, जो **एक सामान्य दर्शक को उक्त प्रदर्श के प्रति उठी जिज्ञासा की प्रारम्भिक स्थिति को विकसित** करने में अपेक्षित रहती है।[6]

द्वितीय प्रदर्शन विधि ऐसे जानकार, **जागरूक जनता हेतु क्रियान्वित किया जाता है जो विषय–वस्तु की समुचित, विद्वतापर्ण एवं निश्चित जानकारी से ओत–प्रोत होते हैं** अथवा उन्हें उन प्रदर्शों के बारे में आवश्यक ज्ञान पूर्व में ही करा दिया जाता है, जिससे उन्हें विवरणों को समझने में आसानी होती है। ये स्थूल पदार्थ एक आधुनिक संग्रहालय के सुव्यवस्थित, आरक्षित संग्रहों द्वारा भली प्रकार प्राप्त किये जा सकते हैं जो **सुप्रबन्धित तथा सूचीपत्र सहित एक पृथक वीथिका में सुसज्जित** होते हैं।

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली में प्रदर्शित प्रदर्श

उपरोक्त **प्रदर्शन विधियों के अतिरिक्त संग्रहालय भ्रमण पर आने वाले अन्य विशेष प्रकार के दर्शकों की मानसिकता** का अध्ययन कर भी प्रदर्शन विधियों को निर्धारित किया जा सकता है। संग्रहालय भ्रमण पर आये दर्शकों की ऐसी भी एक श्रेणी होती है जो **मात्र प्रदर्श के सौन्दर्य पक्ष के पक्षधर होते हैं।** ऐसे **दर्शकों को प्रायः विलक्षण, दुर्लभ वस्तुओं को सुव्यस्थित तथा सुन्दर रीति से सजे हुए देखना पसन्द होता है,** इसीलिए वे उन प्रदर्शों के अवलोकन–अध्ययन हेतु प्रेरित होते हैं। अतः दर्शकों के ऐसे वर्ग की मानसिकता को ध्यान में रखते हुए भी **संग्रहालय प्रदर्शन प्रबन्धन की योजना** बनाते हैं। पर इस प्रकार के उदाहरण **विदेशों में अत्यधिक** पाये जाते हैं।[7]

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 4.1 से साभार

उदाहरण स्वरूप **नीदरलैण्ड के लीडन स्थित नेशनल म्युज़ियम ऑफ इथोनोलॉजी हालैण्ड** में **पद्मासन की मुद्रा में बैठे पाँच ध्यानी बुद्ध की प्रतिमा** को एक विशाल कक्ष में रखा गया है। **दर्शक** आते हैं और वे भी इस प्रदर्श से प्रेरित होकर **ध्यानमग्न होकर उसी मुद्रा में बैठ जाते हैं।** इस प्रकार अपनी रुचि के अनुरूप प्राप्त प्रदर्श के कारण वे काफी समय इस कक्ष में व्यतीत करते हैं।

स्थाई प्रदर्शन कार्य–प्रणाली

संग्रहालय की **स्थाई प्रदर्शनी हेतु किस प्रकार की प्रदर्शन विधि का निर्धारण किया जाय** अथवा **संग्रहालय प्रदर्शनी की कार्यविधि क्या हो,** इस प्रश्न पर विचार करने से पूर्व सर्वप्रथम **हमें दर्शकों की मानसिकता अथवा उनके व्यवहार पर विचार कर लेना चाहिए।** प्रदर्शन योजना आगन्तुक दर्शकों को ध्यान में रखकर निर्धारित की जानी चाहिए।

आज के संग्रहालयों का एक जनकल्याणकारी उद्देश्य यह है कि ***संग्रहालय समस्त प्रकार एवं आयु वर्ग के लोगों की दिली तमन्नाओं की पूर्ति करने में सहायक हो रहे हैं।*** संग्रहालय द्वारा इस तथ्य की स्वीकृति के पश्चात

उनका यह प्रमुख कर्तव्य है कि वे **अपने प्रदर्शनी कार्यक्रमों में नई दृष्टि से पुनर्विचार कर योजना बनाएं तथा एक नवीन आदर्श स्थापित करें** जिनमें एक ओर **विद्वानों शोधकर्ताओं द्वारा किये गए उच्च कोटि के अनुसन्धान कार्यों की प्रमुखता हो,** तो दूसरी ओर संग्रहालय प्रदर्शनी के योजनाबद्ध प्रारूप को सामान्य जनता में लोकप्रिय बनाने का उद्देश्य भी सन्निहित हो। इस कार्य हेतु संग्रहालयों को संग्रहालय प्रदर्शनी की ***द्विभागीय प्रदर्शन विधि*** को क्रियान्वित करना चाहिए।[8]

उच्चकोटि के संग्रहालयों में प्रायः यह देखा गया है कि **विधिवत प्रदर्शित वस्तुओं को भी वर्तमान पीढ़ी के नये दर्शक ध्यान से नहीं देखते हैं।** कदाचित् ही संग्रहालय द्वारा प्रदर्शित कला–वस्तुओं में से किन्हीं एक पर इनकी दृष्टि पड़ जाती है। इसका कारण यह है कि **इस श्रेणी के दर्शक अपनी मानसिकता, उत्सुकता उत्पन्न करने वाली वस्तु–विशेष पर ही अधिक ध्यान देने की होती है** जबकि उसी के बगल में स्थापित ऐतिहासिक महत्त्व के वास्तविक प्रदर्श उपेक्षित हो जाते हैं। सामान्यतः **कलाकृतियों को सुव्यवस्थित रीति से प्रदर्शित करने का कार्य संग्रहालयकर्मी अपने दृष्टिकोण से करते हैं।** इस विधि में संग्रहालय प्रदर्शनी हेतु चयनित प्रदर्शों को ***दो भागों*** में विभाजित कर इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि **एक भाग में ऐसे प्रदर्शों का चयन हो जो सामान्यजनों हेतु प्रदर्शित होता है तथा दूसरे भाग में ऐसे प्रदर्श होते हैं जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध विद्वानों, शोधार्थियों शिक्षाविदों से होता है।** प्रायः देखा गया है कि इन्हें उक्त प्रदर्शों के सम्बन्ध में पहले से ही जानकारी होती है।[9]

प्रदर्शनी के महत्वपूर्ण तत्त्व

प्रदर्श, संग्रहालयों के प्राण होते हैं जिनके बिना संग्रहालय निर्जीव शरीर तुल्य हैं। अतएव यह कहना अधिक समीचीन होगा कि **संग्रहालयों के समस्त क्रियाकलाप प्रदर्श पर ही केन्द्रित होते हैं।** जिनके माध्यम से संग्रहालय जन–जन में ज्ञान एवं आनन्द का संचार कर सदैव विकासरत रहने की प्रेरणा देते हैं। संग्रहालय में स्थापित **प्रत्येक प्रदर्श दर्शकों में अनवरत सन्देश सम्प्रेषण का कार्य करते हैं** जो संग्रहालय के प्रमुख तत्त्व कहलाते हैं।

डॉ ग्रेस मार्ले के शब्दों में–''प्रदर्शनी की विचारधारा की पृष्ठभूमि ही शैक्षणिक कार्य होते हैं जिन्हें इतनी सावधानी से निर्धारित करना चाहिए जितना हम कोई व्याख्यान अथवा पुस्तक लेखन में बरतते हैं। चूँकि **यह प्रक्रिया अपने आप में दर्शकों को प्रदर्शों से साक्षात्कार कराने की विधि** सिद्ध हुई है, जिससे संग्रहालयों को आधुनिक परिवेश में अनुभव एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों के आधार पर प्रदर्शों की स्थापना की क्रिया के एक समान लक्ष्य की उपलब्धि हेतु क्रियान्वित किया जा रहा है।[10]

प्रदर्शों को प्रदर्शन हेतु स्थापित करते समय हमें इस बात पर ध्यान देना होगा कि क्या इन प्रदर्शों का महत्त्व इस तथ्य पर आधारित है कि वे क्या हैं तथा **हम जन–सामान्य को उनके माध्यम से क्या समझाना चाहते हैं** अथवा उनके **स्वरूप–चित्रण** से जन–सामान्य के मन–मस्तिष्क पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसके ठीक विपरीत **क्या उस प्रदर्श में समाविष्ट गुण तथा सौन्दर्य दर्शकों की जान अभिवद्धि में सहायक हैं** अथवा वे **कल्पना लोक में विचरण** करने हेतु बाध्य हैं हमें इस सूक्ष्म बिन्दु को समझना होगा कि ***संग्रहालय संचयागार नहीं अपितु ज्ञान संचार गृह हैं।***

स्थान

प्रदर्श के **प्रभावपूर्ण प्रस्तुतीकरण हेतु समुचित स्थान की अनिवार्यता** भी महत्त्वपूर्ण पक्ष है/ **प्रदर्शनी हेतु स्थान की उपयोगिता अथवा उपलब्धता इस बात पर आधारित होती है कि संग्रहालय भवन की शैली क्या है, संग्रहीत वस्तुओं की प्रकृति क्या है और संग्रहालय के कार्य–संचालन की विधि क्या है।** अपनी प्रकृति एवं उपयोगिता के आधार पर ही प्रदर्शों के स्थापना–स्थल की व्यवस्था सुनिश्चित करनी चाहिए।

आशय यह है कि **संग्रहालय के वास्तु शिल्प का महत्त्व** भी है किन्तु संग्रहालय की विशेषता मात्र भवन से तो नहीं आंकी जा सकती अपितु **यह ज्यादा महत्त्वपूर्ण है कि संग्रहालय में किस कोटि के संग्रह संकलित हैं। संग्रहालय वीथिकाओं एवं स्थाई प्रदर्शनी हेतु उपयुक्त स्थान विभाजन एवं संयोजन विशेष अर्थ रखते हैं।** यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो दर्शकों को प्रदर्शनी अवलोकन हेतु प्रेरित ही नहीं करती बल्कि काफी देर तक उन्हें बांधे रहती है। इस हेतु **संग्रहालय रूपसज्जाकार** को कतिपय बिन्दुओं को ध्यान में रखकर स्थान का उपयोगी विभाजन एवं संयोजन करना चाहिए, जैसे–**आन्तरिक कक्ष को पूर्ण रूप से खुले रखना जिनमें दीवारों का प्रयोग न्यूनतम हो।** आन्तरिक सजावट को सरल रखना जिससे प्रदर्शन की पृष्ठभूमि प्रभावित न हो। आवश्यकतानुसार **कृत्रिम दीवारों, परदों द्वारा सुगमता से स्थान विभाजन सम्भव है जो प्राचीन वास्तुशैली** में निर्मित **शाही संग्रहालय भवन** के स्थाई प्रदर्शन में भी सहायक हो सकते हैं।[11]

प्रतुतीकरण

संग्रहालयों में **किस श्रेणी के प्रदर्शों को किस प्रकार प्रस्तुत किया जाय,** यह एक विचारणीय प्रश्न है। **सामान्य कोटि का दर्शक आधुनिक युग की आपा–धापी में जब कुछ ही क्षण संग्रहालय भ्रमण हेतु निकाल पाता है** तो उसे यह कदापि पसन्द नहीं हो सकता की **उसके ऊपर जबरदस्ती प्रदर्शों से सम्बन्धित ज्ञान थोपा जाय,** क्योंकि इस प्रकार के दर्शकों की मानसिकता संग्रहालय आकर कुछ क्षण आराम एवं आनन्द प्राप्ति में व्यतीत करने की होती है। **दर्शकों में से एक वर्ग** ऐसा भी होता है जो कला एवं संस्कृति के इन **प्रदर्शों के अवलोकन मात्र से आनन्द का अनुभव** करता है तथा साथ ही **कुछ क्षणों के लिए आराम की मुद्रा में अपने को स्थिर कर लेते हैं।** इन्हीं दो विपरीत विचारधारा के मध्य में उक्त प्रश्न का उत्तर निहित है।

इस कार्य में तभी सफलता प्राप्त की जा सकती है **जब हम प्रदर्श को उसके मूल वातावरणजनित स्वरूप में स्थापित कर सकें एवं उसके ऐतिहासिक तथ्यों को आज के परिवेश** में इस प्रकार प्रस्तुत कर सकें कि दर्शक यह समझ लें कि **प्रस्तुत प्रदर्श उसका समकालीन है।** संग्रहालयों का यही प्रधान उद्देश्य होना चाहिए और यदि इस उद्देश्य की पूर्ति में वे सफल होते हैं तो **बिना किसी तनाव एवं बाध्यता का अनुभव किये ही दर्शक एक के बाद एक प्रदर्श को सावधानी पूर्वक देखते हुए** स्वयं से उस प्रदर्श के अन्तर्निहित ज्ञान को ग्रहण करते हुए **पूरे प्रदर्शनी स्थल का भ्रमण** सुविधा एवं सन्तोषप्रद ढंग से कर सकता है।[12]

नाम–पत्र

प्रदर्शनी के लिए **नामपत्र अर्थात लेबल की उपयोगिता** पर कभी–कभी प्रश्नचिन्ह लगाया जाता है, किन्तु इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि **यह संग्रहालय ज्ञान और जनता की जिज्ञासा के बीच प्रदर्श की जानकारी**

के संबंध में माध्यम का कार्य करता है। सभी दर्शक एक उम्र वर्ग और समझ वाले नहीं होते। सम्भव है **विद्वानों के लिए *नामपत्र* की आवश्यकता नहीं हो जबकि सामान्य व्यक्ति सीमित ज्ञान के साथ *प्रदर्शनी एवं प्रदर्श* के विषय में केवल लिखित सहायकों द्वारा ही जान सकता है,** ऐसी स्थिति में **नामपत्र की उपयोगिता स्वयं ही स्पष्ट** हो जाती है। नामपत्र के आकार और प्रदान की जाने वाली सूचनाओ में अंतर हो सकता है।

नाम–पत्र, मूर्तिकला वीथिका, बिहार संग्रहालय, पटना

साधारण रूप में एक ***संक्षिप्त परिचय पत्र को लेबल कहते हैं।*** **एफ.जे .नार्थ** के अनुसार **एक अच्छा लेबल अच्छे सचिव के समान सर्वदा उपलब्ध रहता है,** लेकिन कभी भी बाधक नहीं बनता अर्थात मूल वस्तु के महत्व और सौंदर्य को प्रभावित करने वाला नहीं होता। **वास्तव में लेबल एक माध्यम है जिसके सहारे प्रदर्शित वस्तुओं की सूचना मिल जाती है।** लेबल के आकार और प्रयोग की **गई भाषा को लेकर कुछ मतभेद की स्थिति है।** ***भारत में राष्ट्रीय भाषा हिन्दी और अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में*** लेबल लिखे जाने को मान्यता मिली है। लेबल किसका बनाया जाय यह भी विचारणीय है। ***कागज*** **पर हाथ से लिखकर कर लगाने की विधि की यह समस्या है कि कागज स्थायी नही होता वह खराब होता रहता है,** दर्शक फाड़ देते है, गोंद से चिपकाने के कारण कीडे आकर्षित होकर उन्हें खा जाते हैं। स्याही समय के साथ हल्की पड़ जाती है जिस कारण बार–बार बदलना पड़ता है और इसमें मानवीय श्रम और सम्पत्ति का अधिक नुकसान होता है।

ऐसे में **मोटे और उपचारित कागज पर स्थायी स्याही से लिखकर या टंकण कर** उन्हें लगाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त **पेडेस्टल पर पेंट कर या लकड़ी पर वार्निश लगाकर नामपत्रों अथवा लेबल का निर्माण** किया जा सकता है। कुछ ***संग्रहालय पीतल की पट्टिका लगाते हैं जो महंगा किन्तु दर्शक का ध्यान आकर्षित*** करने वाला होता है। इस कार्य के लिए एक **विशेष प्रकार के *प्लास्टिक*** का प्रयोग किया जाता है। इसकी **पारदर्शी शीट पर अक्षर खोदकर और उसमें छेदकर वस्तु के पास लगाया जाता है।** लेबल लगाने की एक अन्य ***सिंथेटिक वस्तु मेपोफोली*** इस दृष्टि से उपयोगी सिद्ध हो रही है। **वर्तमान में संग्रहालयों में सामान्यतया *हस्तलिखित, स्टेंसिल से लिखे टंकित* और छपे हुए नामपत्रों का प्रयोग होता है। किसी वस्तु विशेष का परिचय देने के लिए *व्यक्तिगत लेबल* लगाए जाते हैं।**

एक ही प्रकार की **एक स्थान से प्राप्त वस्तुओं** के लिए ***समूह नामपत्र*** का, भिन्न प्रकार की वस्तुओं के लिए ***संख्या नामपत्र,*** पूरी वीथिका की जानकारी के लिए **शीर्षक नामपत्र** और छायाचित्र, मानचित्र. चार्ट आदि की सहायता से ***विस्तृत नामपत्र*** लगाए जाते हैं। **दृश्य–श्रव्य माध्यम का उपयोग भी परिचय प्रदान करने के लिए किया जाता है।** प्रवेश द्वार के पास ही कभी–कभी ***परिचय नामपत्र*** लगाकर दर्शक के लिए यह सहज बना दिया जाता है कि वे क्या देखने जा रहे हैं।[13]

डॉ. ग्रेस मार्ले के अनुसार–**सफल नाम–पत्र उसी को मानना चाहिए जिसे पढ़कर दर्शक प्रदर्शों के अवलोकन मात्र से ही अपनी जिज्ञासा का समाधान कर सके** और उक्त प्रदर्श से सम्बन्धित बहुत अथवा अल्प जानकारी, जो तत्सम अन्य प्रदर्श, छायाचित्र, रेखाचित्र के माध्यम से उसे पूर्व से ही ज्ञात हो, से तुलना कर सही निर्णय लेने में समर्थ हो सके।[14]

शो–केस

जिस प्रकार संग्रहालयों हेतु संग्रहों एवं **प्रदर्शों हेतु प्रदर्शनी का महत्त्व है उसी प्रकार प्रदर्शनी हेतु शो–केस की अत्यधिक उपयोगिता है। शो–केस से आशय प्रदर्शनी हेतु प्रदर्शति प्रदर्शों के साथ–साथ उन्हें सुरक्षित रखने हेतु चतुर्दिक आवरण प्रदान करने की विधि से है।** आधुनिक युग में संग्रहों की सजावट एवं उनके सौन्दर्यात्मक, सुरक्षित प्रदर्शन हेतु शो–केस एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

शो–केस के अन्दर प्रदर्शित प्रदर्श

अब यहाँ यह प्रश्न विचारणीय हो जाता है कि संग्रहालयों में शो–केस की आवश्यकता किस हेतु समझी गई, **क्या बिना शो–केस के संग्रहों का प्रदर्शन सम्भव नही है, पुनः यदि शो–केस की अनिवार्यता है तो वे किस सीमा तक आवश्यक और उपयोगी हैं,** इनका उद्देश्य मात्र सौन्दर्य की अभिवृद्धि करना तथा रूचि उत्पन्न करना ही है अथवा अन्य उपयोगिताएँ भी हैं।[15] उपरोक्त प्रश्न पर विचार करने पर हम पाते हैं कि **संग्रहों के प्रदर्शनार्थ शो–केस अनेक दृष्टि**

से उपयोगी सिद्ध होते हैं। सर्वप्रथम तो संग्रहों की सुरक्षा इनके माध्यम से हो जाती है। **पूर्व में दुर्लभ, अप्राप्त वस्तुओं को आसानी से चुराना, निकालना, लघु सामग्रियों को स्पर्श या धक्के से गिरकर टूट जाना आदि, एक विकट एवं गम्भीर समस्या रही है जिसके स्थाई विकल्प स्वरूप शो–केस ही उपयोगी उपकरण सिद्ध हुए हैं।** इतना ही नहीं धूल, कीड़े–मकोड़ों, प्रकाश, वायु, वातावरण के प्रभाव में आकर वस्तुएँ जीर्ण–शीर्ण अथवा क्षत–विक्षत होती जाती हैं। इनकी आयु कम होती जाती है। इन प्राकृतिक प्रकोपों से प्रदर्शों को सुरक्षित रखने का एक मात्र उपाय ***शो–केस*** ही है।

हुडशोकेसों में चार या पांच काँच के पहलू होते हैं जो लकड़ी या धातु के फ्रेम पर जड़े होते हैं या एक **विशेष सीमेंट से जोड़े** जाते हैं। शोकेस वस्तु की प्रस्तुति में अहम भूमिका निभाते हैं और उन्हें सुरक्षित भी रखते हैं। फिर भी कुछ लोगों का यह मानना है कि **वस्तुओं को शोकेस में नहीं प्रदर्शित करना चाहिए क्योंकि दर्शक और वस्तु के बीच में शीशा आ जाता है।** ***यूनेस्को*** ने संग्रहालय शोकेसों के विषय में एक ***मोनोग्राफ*** तैयार किया है। यह उनके लिए अत्यंत उपयोगी है जो विभिन्न उद्देश्यों के अनुरूप शोकेस बनाने के इच्छुक रहते हैं।[16]

प्रदर्शों के समूह को एक निर्दिष्ट विचारधारा से प्रेरित होकर उन्हें सफल एवं सुनियोजित रीति से प्रदर्शित करने का दायित्व ***सज्जाकार*** का होता है **जहाँ वह प्रदर्शों को विभिन्न प्रकार के शोकेसों में सजाकर संग्रहालय वीथिकाओं में प्रदर्शित करता है।** इस कार्य में कतिपय सहायक तत्त्वों की भी सहायता ली जाती है। **इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि संग्रहालयों में प्रदर्शों के आकर्षक प्रस्तुतीकरण में शोकेसों का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है जिनकी संरचना प्रदर्शों की प्रकृति एवं उनकी प्रदर्शन योजना पर निर्भर करती है।** प्रदर्शनी की सामान्य योजना के अनुसार उनमें व्यावहारिक परिवर्तन भी होते रहते हैं। शोकेसों द्वारा दो प्रकार के उद्देश्यों उपयोगितापरक एवं सौन्दर्यपरक की पूर्ति होती है।[17]

1. सौन्दर्यपरक उद्देश्य वाले शो–केस

शोकेस के सौन्दर्यपरक उद्देश्य का आशय प्रदर्शों के आकर्षण से है यानि उसकी आन्तरिक सज्जा आकर्षक *हो,* जिससे प्रदर्श अपने सन्देश रूचिकर एवं प्रभावी ढंग से दर्शकों को प्रदान कर सकें, क्योंकि **संग्रहालयों का उद्देश्य प्रदर्शों के माध्यम से उनमें निहित सन्देश को दर्शकों तक पहुँचाना अनिवार्य उद्देश्य है।** कहीं ऐसा न हो कि शोकेस की बाह्य अलंकृत संरचना पर ही दर्शकों का ध्यान केन्द्रित होकर रह जाय और आन्तरिक प्रदर्शों का महत्त्व ही गौण हो जाय अतएव शो–केस के बाह्य अलंकरण को कम महत्त्व देना चाहिए। ***शोकेस की उपयोगिता 'प्रदर्श शोकेस' के लिए न होकर प्रदर्शों के लिए होनी चाहिए।*** इस हेतु अलंकरणों की भरमार, विशेष उत्कीर्णित सजावट की वर्जना की जानी चाहिए। **पृष्ठभूमि के रंगों का चयन, प्रकाश व्यवस्था, शोकेस में लगने वाले पारदर्शी काँच तथा अन्य आवश्यक संसाधनों का प्रयोग रूप सज्जाकार को विचार कर ही सावधानीपूर्वक करना चाहिए।** शोकेस का सौन्दर्य वास्तव में यही है कि वह इन आवश्यकताओं के सर्वथा अनुकूल हो ताकि प्रदर्शों को अधिक से अधिक आकर्षक रीति से परिलक्षित किया जा सके।

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.2 से साभार

जहाँ तक **शोकेसों के आकार–प्रकार का प्रश्न** है, विभिन्न संग्रहालयों में विभिन्न प्रकार के शो–केसों का प्रयोग किया जाता है, जैसे–**टेबुल–शो–केस, उर्ध्व शो–केस (चित्र : 7.2), पैनल और दराज युक्त शो–केस, स्थान विभाजक शो–केस (चित्र : 7.4) आरक्षित संग्रह स्थान युक्त शो–केस (चित्र : 7.5) जिन्हें डिजाइनर प्रदर्शों** की प्रकृति, प्रदर्शनी की योजना तथा वीथिकाओं हेतु उपलब्ध स्थान के अनुसार निर्माण करवाता है।[18]

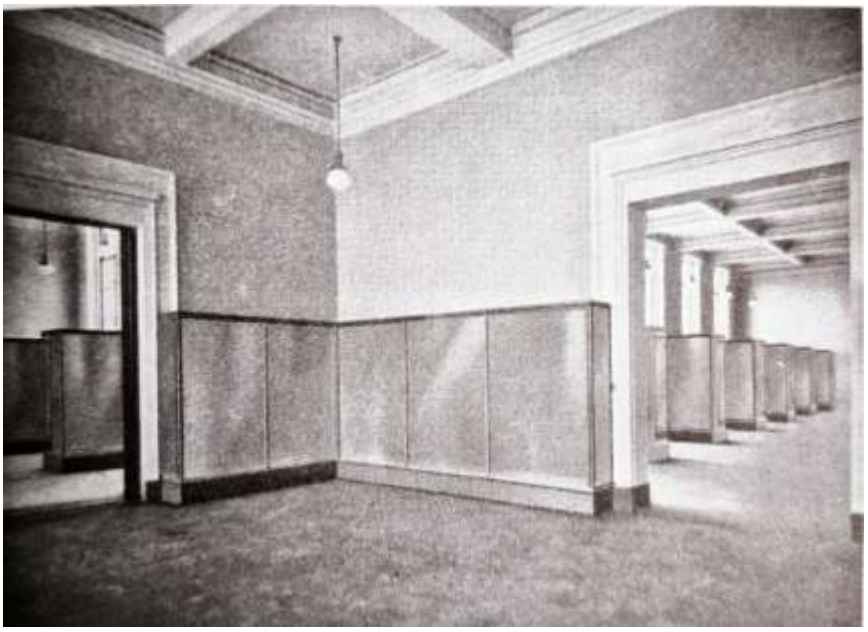

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.4 से साभार

अपनी आवश्यकतानुसार अथवा **अपने प्रदर्शों की सुरक्षा हेतु** हम चाहे जिस आकार–प्रकार के **सुन्दर से सुन्दर शोकेसों का निर्माण** कर लें, **हमें इस बात पर अपना ध्यान केन्द्रत करना ही होगा कि इन शोकेसों में रखा हुआ प्रदर्श सुरक्षित भी रहे और दर्शकों को आसानी से दिख भी सके।** शोकेस यदि इतने सुन्दर बना दिये जाएं कि प्रदर्श देखने के बजाय दर्शक शोकेसों के सौन्दर्य में ही उलझ कर रह जाएं तो इसके भीतर के **प्रदर्श का कोई औचित्य ही नहीं रह जायेगा।**[19]

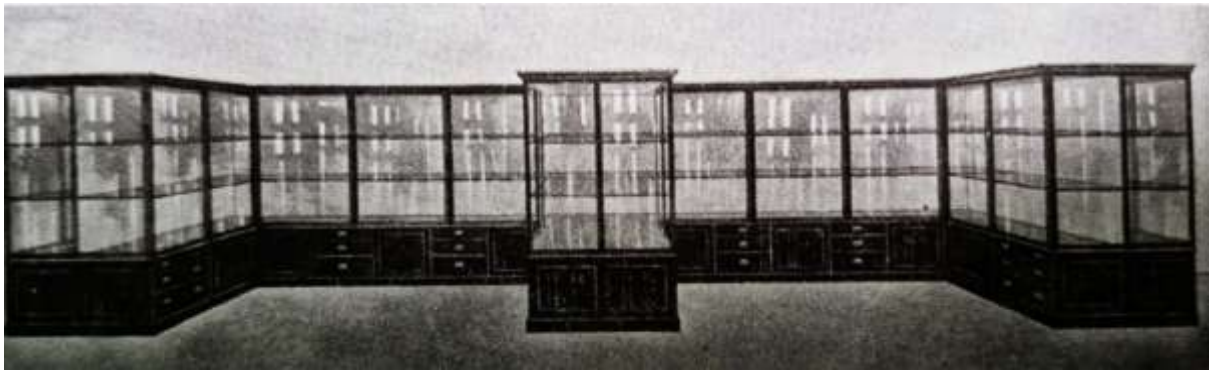

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.5 से साभार

इस पूरी प्रक्रिया का आवश्यक विचारणीय पक्ष यह है कि **विभिन्न आकार–प्रकार के शोकेसों के निर्माण का पूरा दायित्व एक कुशल सज्जाकार की कल्पना एवं सौन्दर्य–बोध** की सफल परिणति पर आधारित होता है।

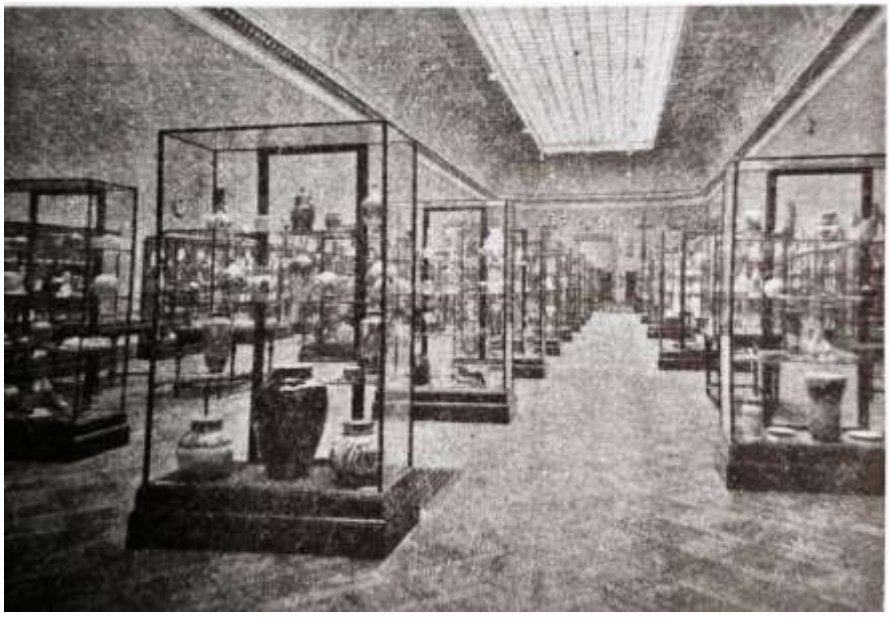

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 : 7.6 से साभार

संग्रहालयों में कार्यरत मूर्धन्य संग्रहालयविद प्रदर्शों के गुण–अवगुण का शाब्दिक विवेचन तो बखूबी कर लेते हैं। शोकेस निर्माणकर्त्ता बहुत ही सुन्दर मजबूत शोकेस निर्माण भी कर लेता है, किन्तु यह **सज्जाकार की ही प्रतिभा**

का सफल परिणाम होता है कि प्रदर्श और दर्शकों के बीच शोकेस, आवरण युक्त होते हुए भी अवरोध नहीं उत्पन्न करता है। **(देखिये चित्र : 7.6)**

2. उपयोगितापरक उद्देश्य वाले शो–केस

शोकेसों की उपयोगिता पर यदि हम विचार करें तो हम पाते हैं कि **वातावरणजनित कारणों यथा–तीव्र प्रकाश, तीव्र वायु–प्रकोप, गर्द, जलवायु, कीड़ों से सुरक्षा तथा सर्वोपरि उपलब्धि दर्शकों की असावधानीवश** प्रदर्शों के नष्ट होने की सम्भावना आदि से प्रदर्शों की सुरक्षा होती है। इस हेतु **शोकेसों को इस भाँति वैज्ञानिक पद्धति से बन्द किया जाना चाहिए कि बाह्य–हवा का प्रवेश अन्दर न हो सके।** साथ ही शोकेसों की रचना में ***लचीलापन*** भी हो जिससे आवश्यकतानुसार उन्हें आसानी से ***खोला, बन्द तथा स्थानान्तरित*** किया जा सके।

कलात्मक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बड़े आकार की मूर्तियाँ अथवा अन्य प्रदर्श शोकेसों की उपयोगिता को प्रदर्शित करते हैं। सामान्यतया **दर्शकों में प्रदर्शों को हाथ से छूकर देखने की इच्छा** रहती है। यदि ये **प्रदर्श दर्शकों** की पहुँच में हों तो **उनके स्पर्श से मूर्तियां अथवा अन्य प्रदर्शों को नुकसान पहुँच** सकता है। संरक्षणकर्ताओं के अनुसार दर्शकों के हाथों से निकलने वाले ***अम्लीय पदार्थ*** स्पर्श किये गए **भाग को काला** कर देते हैं। जिसके प्रमाण अनेक भारतीय संग्रहालयों में देखे जा सकते हैं। इस प्रकार की सम्भावनाओं के निराकरण हेतु भी **शोकेस एक कारगर उपाय** है। **मिट्टी के बर्तनों एवं मृण्मूर्तियों के सदृश नाजुक सामग्रियों के प्रदर्शनार्थ शोकेस की उपयोगिता विशेष रूप से परिलक्षित होती** है।[20]

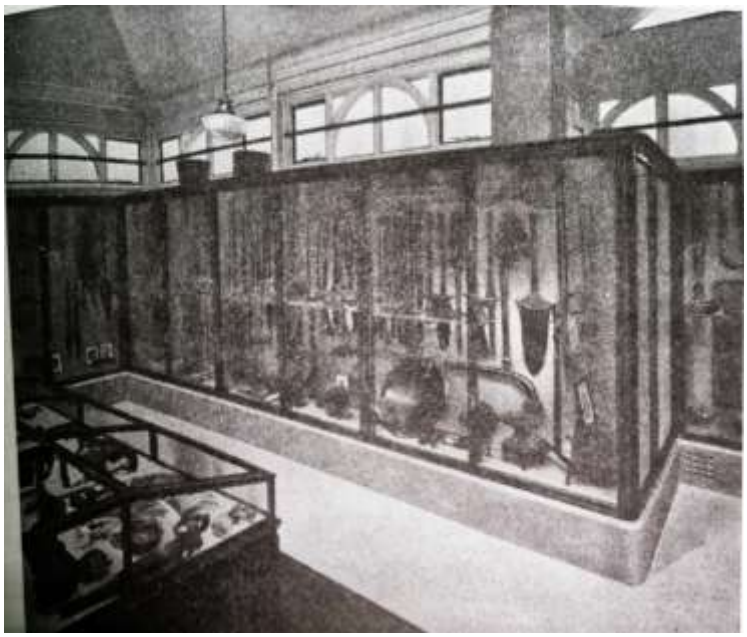

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.3 से साभार

शोकेस का **निर्माण** इस प्रकार से किया जाना चाहिए कि **शोकेस के आन्तरिक हिस्से को पूर्णतः उपयोग** में लाया जा सके और उसमें सभी आवश्यक उपादान उपस्थित हों जिससे रख–रखाव का कार्य सुगम हो सके तथा **वस्तुएँ अधिक यथार्थ** लगने लगें।[21]

प्रकाश व्यवस्था

प्रदर्शनी के आयोजन में **प्रकाश–व्यवस्था** अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह विचार का विषय है कि **प्रकाश–व्यवस्था कैसी हो, इस व्यवस्था के अन्तर्गत रंगों का समायोजन किस प्रकार का हो, ऐसे प्रदर्श** जिन पर कम प्रकाश देने से उसके स्वरूप में निखार आ सकता है किन्तु असावधानी–वश हम ***अपेक्षा से अधिक प्रकाश देकर उक्त प्रदर्श का सौन्दर्यात्मक स्वरूप नष्ट कर देते हैं,*** इसके विपरीत अधिक प्रकाश देने के स्थान पर ***कम प्रकाश देकर भी उसका स्वरूप नहीं निखार पाते।*** इसमें **असावधानी** होने की स्थिति में सारी जिम्मेदारी **संग्रहालय निदेशक, संग्रहपाल** अथवा अन्य किसी **वरिष्ठ अधिकारी** की न होकर मात्र **कुशल सज्जाकार** की ही होती है।

संग्रहालय में प्रदर्शित प्रकाश व्यवस्था

यदि प्रकाश सीधे वस्तु पर नहीं पडे तो वह कम नुकसानदायक होता है। **ऊपर से पड़ने वाला प्रकाश यदि 60 अंश के कोण पर पड़े तो अच्छा होगा कि सूर्य के प्रत्यक्ष प्रकाश को कांच पर जिंक आक्साइड या टिटैनियम व्हाइट का लेप चढाकर उसकी तीव्रता को रोक दिया देना चाहिए।** आँखें अधिक प्रकाश से कम प्रकाश में तुरंत देखने की अभ्यस्त नहीं हो होती हैं, इसलिए **एक शोकेस से दूसरे शोकेस में या एक वीथि से दूसरी वीथि में प्रकाश के स्तर में बहुत अधिक अंतर नहीं होना चाहिए।** सभी **शोकेसों** तथा **वीथियों** की ***स्विच अलग–अलग*** होनी चाहिए जिससे आवश्यकता पड़ने पर ही उन्हें **जलाया** जाये।

संग्रहालय शोकेसों के आंतरिक प्रकाश व्यवस्या को बनाए रखना सरल नहीं होता है। ***कृत्रिम प्रकाश*** में प्रदर्शों के रंग कैसे दिखते हैं और इस प्रकाश **द्वारा होने वाली हानि की संभावनाओं** पर विचार कर लिया जाता है। **प्रकाश की तीव्रता एक ओर से अधिक और दूसरे ओर से धीमा होनी चाहिए तभी वस्तु में उभार आता है नहीं तो वह सपाट दिखती हैं।** वस्तु को उभारने के लिए सामान्य लाइट को बुझा देना चाहिए। **शोकेस को बिना खोले बल्ब एवं ट्यूब बदलने की व्यवस्था होनी चाहिए। प्रतिदीप्त और उद्दीप्त प्रकाश स्रोतों** के चुनाव भी भौतिक संरक्षण के आधार पर किए जाने चाहिए। **स्पॉट लाइट** से वस्तु को अच्छी तरह देखा जा सकता है।

नवीन फ्लोरेसेन्ट टयूब अब सफेद सॉफ्ट सफेद. वार्म सफेद डीलक्स वार्म, सफेद, ठण्डा सफेद, डीलक्स कूल सफेद और डेलाइट इन सात प्रकार के रंगों में आती है। प्रकाश व्यवस्था द्वारा नाटकीय प्रभाव या सजीवता लाई जा सकती है, उदाहरणार्थ **यदि किसी वीथि में बुद्ध की प्रतिमा को प्रदर्शित कर कमरे में हल्का प्रभाव रखते हुए बुद्ध प्रतिमा पर स्पॉट लाइट से प्रकाश डाला जाय तो दर्शक भाव–विभोर होकर धार्मिक भावना ओत–प्रोत** होकर उसे देखते ही रह जाऐंगे। इस प्रकार के प्रयोग कुछ संग्रहालय कर भी रहे हैं। **संग्रहालय की दृष्टि से सुरक्षित ट्यूबलाइट एवं बल्ब बनाने का कार्य भी कुछ कपनियाँ कर रही हैं।** आयोजक अपने संसाधन के अनुसार उपलब्ध व्यवस्था में से सुरक्षात्मक उपकरणों का चुनाव करते हुए, **दर्शकों के आकर्षण को ध्यान में रखते हुए प्रकाश की व्यवस्था वीथिका** में लगे **शोकेसों** में करते हैं।[22]

एक विचारणीय बिन्दु जिस पर **सज्जाकार ही नहीं अपितु समस्त संग्रहालयकर्मियों को ध्यान** देना चाहिए कि **हमारे पूर्वजों ने अनेक उच्च कोटि के प्रस्तर शिल्प, धातु शिल्प आदि का निर्माण हजारों वर्ष पूर्व किया था जिनकी स्थापना में प्राकृतिक प्रकाश व्यवस्था का समुचित ध्यान रखा गया।** आज की भाँति आधुनिक **कृत्रिम प्रकाश** तो था नहीं, **प्रकृति–प्रदत्त प्रकाश** से ही उन **मूर्तियों की सुन्दरता में वृद्धि** होती थी, निखार आता था जिसका ध्यान उन्हें स्थापित करते समय दिया जाता था। दूसरे शब्दों में ***स्थापना स्थल को इस रूप में बनाया जाता था कि मूर्ति पर प्राकृतिक प्रकाश वांछित मात्रा में ही पड़े।*** आज हम उन्हीं मूर्तियों को संग्रहालयों के **शोकेसों में, कृत्रिम प्रकाश में स्थापित** करने के लिए बाध्य हैं।[23]

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.7 से साभार

विदेशों में अनेक ऐसे भी प्रयोग हो रहे हैं जिनमें **प्राकृतिक एवं कृत्रिम दोनों ही प्रकाश व्यवस्था की योजना** को क्रियान्वित किया जा रहा है जो नवीन संग्रहालयों की योजना हेतु अनुकरणीय हो सकता है। **(देखिये चित्र सं0 7.**

7) कई **संग्रहालयों ने संग्रहालय के भवन को इस प्रकार निर्मित कराया है कि प्रदर्शों पर प्राकृतिक प्रकाश भरपूर रूप से पड़ सके।**

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.8 से साभार

अस्थाई प्रदर्शनी

अस्थाई प्रदर्शनियों के आयोजन कई दृष्टियों से उपयोगी हैं। **ये नियमित दर्शकों की रूचि को बढ़ाकर उन्हें अधिक संख्या में आकर्षित करते हैं साथ ही शोधार्थियों के लिए भी उपयोगी** भूमिका निभाते हैं।[24] यदा–कदा अन्य **संग्रहालयों से कोई अति–विशिष्ट कलाकृतियों को अल्पावधि के लिय उधार माँगकर अपने संग्रहालय में प्रदर्शित करने की प्रक्रिया** भी सम्प्रति संग्रहालयों में प्रचलित है।

अस्थायी प्रदर्शनी की आवश्यकता दर्शकों की रुचि को बनाए रखने और अधिक से अधिक ज्ञान लाभ के लिए होती है। **भंडार या आरक्षित संग्रह से कुछ वस्तुएं निकालकर इसके माध्यम से दर्शकों को दिखाया जा सकता है। नवीन संग्रहीत वस्तु को जल्द से जल्द प्रदर्शित करना भी इसके द्वारा संभव होता है। स्थानीय दर्शकों** को अधिक और विस्तृत ज्ञान **अस्थायी प्रदर्शनी आयोजित** कर प्रदान किया जा सकता है। इस प्रकार की प्रदर्शनी से नवीन विषयों पर विस्तृत जानकारी जानकारी दी जा सकती है तथा **अन्य क्षेत्रों और बाहरी देशों की वस्तुओं को देखने, जानने और समझने का अवसर मिलता है।** इससे स्थान के अभाव के कारण **भंडार में रखी वस्तुओं को देखने** का अवसर तो मिलता ही है साथ ही **प्रदर्शन विधियों और सहायक तत्वों के संदर्भ में प्रयोग** का अवसर भी मिलता है जिनमें से सफल और उपयुक्त तत्वों को स्थायी प्रदर्शन में अपनाया जा सकता है। ***इसके द्वारा इतिहास की महत्वपूर्ण घटना, विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर, महत्वपूर्ण वैज्ञानिक एवं तकनीकी आविष्कार, किसी महान व्यक्ति के व्यक्तित्व अथवा अन्य पहलुओं पर प्रकाश डालने में संग्रहालय*** समर्थ होता है। इस प्रकार की प्रदर्शनी अत्यधिक प्रभावी और आकर्षक होती

है। **रंग योजना प्रकाश व्यवस्था,** आँखों तथा मन मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले अन्य कारक इस प्रकार की प्रदर्शनी को कारगर बनाते हैं।[25]

अस्थायी प्रदर्शनी आज प्रचार का सबसे सशक्त माध्यम है। यह दो दृष्टियों से लाभकर है **–एक तो इसकी ओर सामयिक आयोजनों के कारण जनता का आकर्षण होता है तो दूसरी ओर परिवर्तन का भूखा समाज इसे स्थायी की अपेक्षा अधिक पसन्द करता है।** इसके कारण **छात्रों, नागरिकों तथा शिक्षित** लोगों की **बार–बार संग्रहालय आने** की इच्छा बढ़ती है। **शोधकर्ता** जो इस विषय पर काम कर रहे हैं उनके लिए भी इसकी उपयोगिता होती है। **इसके माध्यम से किसी विशेष घटना धार्मिक उत्सव, ऐतिहासिक घटना, महान व्यक्तित्व के काल की क्रियाएँ, किसी विशेष विधा को बढावा देने** आदि के सम्बन्ध में तथा इसके नाम पर इसका आयोजन होता है। ऐसी प्रदर्शनियाँ आज अनेक संग्रहालयों द्वारा आयोजित की जाती हैं। ***'फोटोग्राफी हिस्ट्री ऑफ दि यूनिवर्स'*** का आयोजन ***राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र, नई दिल्ली*** ने 1997 ई में ***'खेतों से सब ओर उकेरे' राष्ट्रीय संग्रहालय भोपाल*** द्वारा, ***'अवध की नवाबी कला', राज्य संग्रहालय लखनऊ द्वारा दोनों 1985 ई. में, 'रायकृष्णदास एवं समकालीन साहित्यकार', 'भारत कला भवन संग्रहालय वाराणसी'*** द्वारा 1992 ई. में आयोजित किया गया था। ऐसी प्रदर्शनियाँ को कोई संग्रहालय साल में प्रायः एक बार ही आयोजित करता है। कभी–कभी **मेलों, पर्वों, विशेष समारोहों के अवसरों तथा विशेष अतिथियों के सम्मान आदि में भी इनका आयोजन होता** है।[26]

यदा–कदा महत्त्वपूर्ण **ऐतिहासिक घटनाओं, वैज्ञनिक उपलब्धियों अथवा महापुरूषों के जीवन से सम्बन्धित घटनाक्रमों को प्रचारित** कर अधिकाधिक जन–समुदाय के ध्यान को आकृष्ट करने में **संग्रहालय अस्थाई प्रदर्शनियों** के माध्यम से जितना समर्थ हो पाते हैं, स्थिर प्रकृति की स्थाई प्रदर्शनियाँ प्रायः ऐसे लक्ष्य की प्राप्ति में असफल रहती हैं।[27]

संग्रहालयों के आधुनिक क्रिया–कलापों में अस्थाई प्रदर्शनी के आयोजन का प्रचलन विगत दशकों में तीव्रता से बढ़ा है, चाहे वह किसी भी श्रेणी की कलाकृतियों से सम्बन्धित क्यों न हो फिर भी कई संग्रहालय ऐसे महत्त्वपूर्ण आयोजन नहीं कर पाते या **उन्हें महत्त्व ही नहीं** देते हैं। कतिपय संग्रहालय ऐसे भी देखने में आते हैं **जो वर्ष में एक ही बार संग्रहालय प्रदर्शनी का आयोजन करते हैं।** सम्भवतः **बज़ट की कमी, स्थान की कमी या फिर संग्रहालयकर्मियों की उदासीनता** आदि इसके कुछ प्रमुख कारण हो सकते हैं। कुछ ऐसे भी संग्रहालय हैं जो **अस्थाई प्रदर्शनियों का आयोजन ही नहीं करते** जो उनकी उदासीनता को दर्शाते हैं। **पुरातात्त्विक संग्रहालयों में तो ऐसी उदासीनता अधिक देखी जा सकती है** जो भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के अधीन विभिन्न स्थानों पर कार्यरत हैं।

अनवरत अस्थाई प्रदर्शनी आयोजन की संख्या यह इंगित करती है कि उक्त संग्रहालय समुदाय सेवा के प्रति कितना जागरूक है। इस दृष्टि से ***सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद*** का प्रयास सराहनीय माना जा सकता है जो **अपने सुरक्षित संग्रहों के माध्यम से समाज से जुड़े धार्मिक अर्थों को दर्शाता हुआ, अस्थाई–प्रदर्शनियों की कई योजनाबद्ध श्रृंखलाओं का आयोजन करता है।** स्थानीय जनता को आकर्षित करती ये प्रदर्शनियाँ उनकी इच्छाओं के अनुरूप होती हैं, यथा–**क्रिसमस पर्व पर 'ईसाई धर्म व कला', कृष्ण जन्माष्टमी पर 'भारतीय कला में कृष्ण' या ईद पर 'भारतीय**

कला में मुगल योगदान' सदृश विशिष्ट प्रदर्शनियाँ जन–समुदाय को प्रभावित व प्रोत्साहित कर संग्रहालय की ओर उन्मुख करने में अतिरिक्त योगदान देती हैं।[28]

भारत में अस्थाई प्रदर्शनी आयोजित करने वाले संस्थान

पुरातात्त्विक संग्रहालयों में *राजकीय संग्रहालय, मथुरा (उ.प्र.), लालभाई दलपत भाई पुरातत्त्व संग्रहालय, अहमदाबाद (गुजरात), राज्य संग्रहालय (भोपाल)। ऐतिहासिक संग्रहालयों में विक्टोरिया मेमोरियल संग्रहालय, कलकत्ता, टीपू सुल्तान संग्रहालय, श्री रंगपट्टनम (कर्नाटक)। विश्वविद्यालयीय संग्रहालयों में भारत कला भवन संग्रहालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (उ.प्र.), गुरूकुल संग्रहालय, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार), सरदार पटेल विश्वविद्यालय संग्रहालय (गुजरात) आदि का प्रमुखता से उल्लेख किया जा सकता है।*

कला संग्रहालयों में *राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली, शिल्प संग्रहालयों में शिल्प संग्रहालय, कलकत्ता, राष्ट्रीय हस्त शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली, काटेज इन्टस्ट्रीयल म्यजियम, गुवाहाटी, वैयक्तिक स्मारक संग्रहालयों में गाँधी स्मारक संग्रहालय, नई दिल्ली व अन्य गाँधी संग्रहालय, नेहरू स्मारक संग्रहालय, नई दिल्ली, विशिष्ट वस्तु संग्रहालयों में केलिको वस्त्र संग्रहालय, अहमदाबाद (गुजरात), राष्ट्रीय रेल परिवहन संग्रहालय, नई दिल्ली, राष्ट्रीय डाक–टिकट संग्रहालय, नई दिल्ली तथा* ***बाल संग्रहालयों में*** *श्री गिरधरभाई संग्रहालय, अमरेली (गुजरात), राष्ट्रीय बाल संग्रहालय, बाल भवन सोसाइटी, नई दिल्ली, मोतीलाल नेहरू बाल संग्रहालय, लखनऊ, नेहरू बाल संग्रहालय, कलकत्ता आदि प्रमुख हैं।*

इनके अतिरिक्त अस्थाई प्रदर्शनी के आयोजन में पूरे देश में **विज्ञान संग्रहालयों** की अग्रणी भूमिका है। पूरे भारत वर्ष में ***'राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहाल परिषद्'*** के अन्तर्गत लगभग 30 से अधिक ***विज्ञान केन्द्र, विज्ञान पार्क, विज्ञान नगर, तारामंडल*** आदि स्थापित हैं जिनमें पूर्व में स्थापित ***बिरला औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय तथा विश्वेश्वरैया औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी संग्रहालय*** भी शामिल हैं। **ये सभी संग्रहालय अस्थाई प्रदर्शनी के अनवरत आकर्षक आयोजन** द्वारा ही आज जन–जन में लोकप्रिय हैं।[29]

नई दिल्ली स्थित ***राष्ट्रीय संग्रहालय*** विभिन्न विषयों से सम्बन्धित कई **अस्थाई प्रदर्शनियाँ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित करता है,** जो पूर्व नियोजित कार्यक्रमानुसार योजनाबद्ध व व्यवस्थित ढंग से आयोजित की जाती हैं जिनमे कभी–कभी **देश के अन्य संग्रहालयों तथा विभिन्न संग्रह संस्थानों** से भी, विषय से सम्बन्धित **प्रदर्श उधार में प्राप्त किये जाते हैं** जो प्रदर्शनी को स्वतः ही रोचक बना देते हैं। **(देखिए चि : 7.9)**

राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली

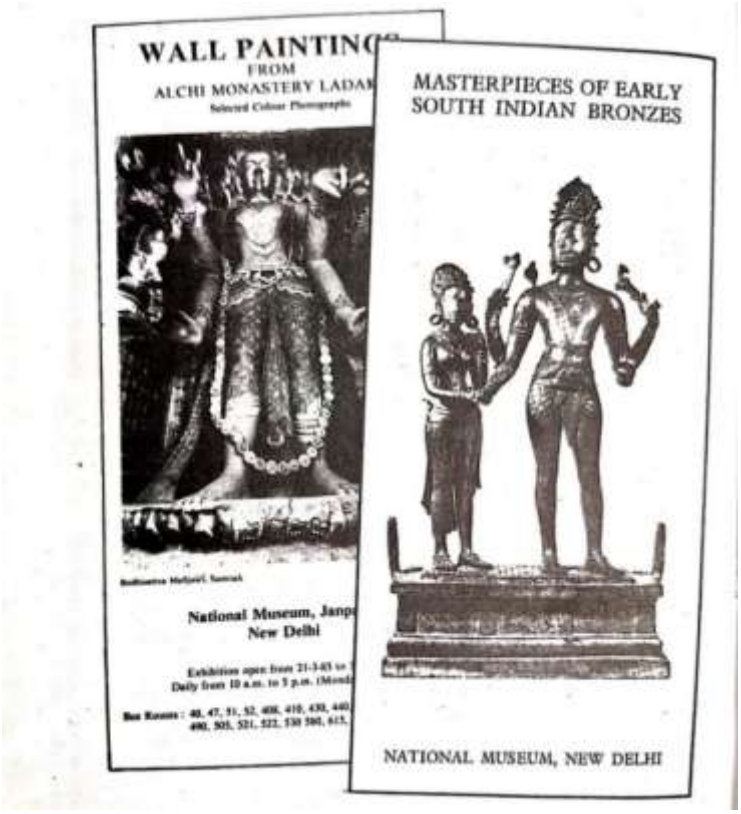

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.9 से साभार

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, नई दिल्ली भी अन्य संग्रहालयों, संस्थानों की मदद से प्रसिद्ध व्यक्तित्व की स्मृति में समय–समय पर **अस्थाई प्रदर्शनियाँ आयोजित** करता है। **भारत कला भवन, वाराणसी** में **स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती श्रृंखला** में आयोजित **अस्थाई प्रदर्शनी 'बंगाल की चित्रकला'** हेतु **'भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता'** द्वारा **प्रदर्श मंगाकर अपने यहाँ प्रदर्शित किया गया** जिनमें **बंगाल के 19वीं सदी के कलाकारों के चित्र की दुर्लभ झाँकी** थी। **राजकीय संग्रहालय, मथुरा** भी प्रति **चार वर्ष** पर **अस्थाई प्रदर्शनी** आयोजित करता है।[30] ***राज्य संग्रहालय, लखनऊ*** प्रदर्शनी हेतु **अन्य संग्रहालयों से प्राप्त सामग्रियों** पर होने वाले **व्यय** को प्रायः **स्वयं वहन करता** है। संग्रहालयों एवं अन्य संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में भी ***अस्थाई प्रदर्शनियाँ*** आयोजित की जाती हैं।

संग्रहालय प्रदर्शिनी में प्रदर्शित प्रदर्श

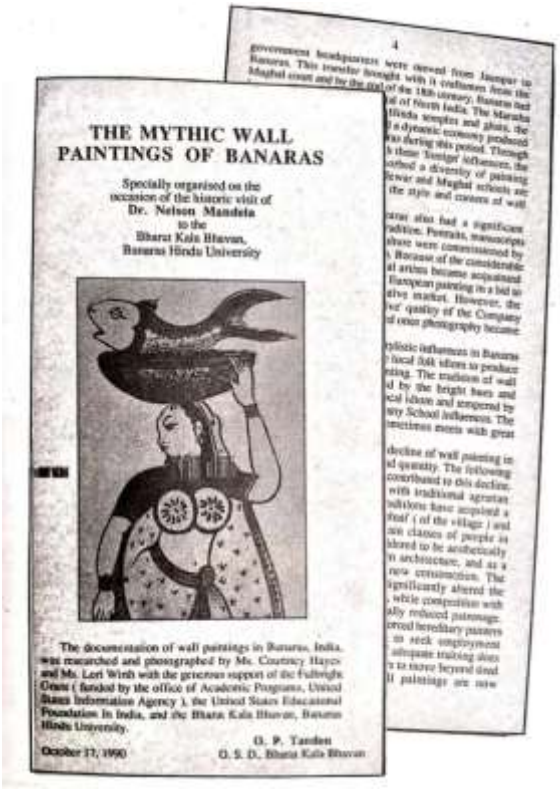
THE MYTHIC WALL PAINTINGS OF BANARAS

Specially organised on the occasion of the historic visit of Dr. Nelson Mandela to the Bharat Kala Bhavan, Banaras Hindu University

The documentation of wall paintings in Banaras, India, was researched and photographed by Ms. Courtney Hayes and Ms. Lori Wirth with the generous support of the Fulbright Grant (funded by the office of Academic Programs, United States Information Agency), the United States Educational Foundation in India, and the Bharat Kala Bhavan, Banaras Hindu University.

October 27, 1990

G. P. Tandon
O. S. D., Bharat Kala Bhavan

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.10 से साभार

अतिथि के सम्मान में अस्थाई प्रदर्शनी का आयोजन भी एक अनूठा प्रयोग है। **भारत कला भवन, वाराणसी ने 23 सितम्बर 1979** में ऐसा ही एक आयोजन किया था जिसके तहत **नेपाल नरेश बीरेन्द्र एवं रानी ऐश्वर्या का स्वागत 'आर्ट हेरिटेज आफ नेपाल' नामक अस्थाई प्रदर्शनी लगाकर किया गया।** इस विशेष प्रदर्शनी में **नेपाल की कला सम्पदा पर विशेष प्रकाश** डाला गया। ऐसी ही एक विशिष्ट प्रदर्शनी ***1990 में डॉ. नेल्सन मन्डेला*** के ऐतिहासिक आगमन पर **भारत कला भवन ने 'दी मैथिक वाल पेन्टिग्स आफ बनारस' लगा कर उन्हें बनारस की पारम्परिक कला संस्कृति से परिचित कराया था। (देखिये चित्र : 7.10)**

भारत की आजादी की 50वीं वर्षगांठ पर राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली द्वारा ***1 से 15 अगस्त, 1998*** के मध्य **नई दिल्ली के इण्डिया गेट** प्रांगण में लगायी गई अस्थाई प्रदर्शनी ***'एचिवमेन्ट सिन्स इण्डियेन्स एण्ड इण्डियाज़ विजन फॉर फ्यूचर'*** भी जन आकर्षण का केन्द्र रही। इस संग्रहालय ने इसी अवसर पर ***वन तथा पर्यावरण मंत्रालय व भारत सरकार*** के संयुक्त तत्वावधान में भी एक अन्य ***प्रदर्शनी 'एचिवमेट्स एण्ड विजन फॉर द फ्यूचर ऑफ इण्डियन एन्वायर्नमेण्ट'*** विषय पर आयोजित की जिनमें जीवन के विभिन्न रूप, संरक्षण, पर्यावरण प्रदूषण, पर्यावरणीय शिक्षा जन जागृति आदि विषय जन–साधारण को प्रभावित करने में सफल रहे।[31]

अस्थाई प्रदर्शनी के आयोजन से पूर्व संग्रहालयों को निम्न महत्त्वपूर्ण बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

1. निर्धारित **विषय वस्तु के अनुसार वांछित सभी सामग्रियों का चयन कर ही** तदनुरूप योजना बनाकर प्रदर्शन की रूप–रेखा तैयार करनी चाहिए। इस हेतु **निदेशक, संग्रहपाल या संग्रहाध्यक्ष, विभाग प्रमुख, प्रदर्शन अधिकारी, प्रचार**

अधिकारी सज्जाकार या कलाकार आदि व्यक्तियों का समन्वित प्रयास पूरे **प्रदर्शनी** को सफल बनाने में श्रेयस्कर हो सकता है।

2. प्रदर्शनी हेतु उधार लायी गई कलाकृतियों अथवा प्रदर्शों का पंजीकरण, संग्रहालयों में **स्थाई रूप से रखे हुए प्रदर्शों से भिन्न होना चाहिए।**[32] उधार लिए गए प्रदर्शों को ले जाने एवं वापस लौटाने की प्रक्रिया में कलाकृतियाँ नष्ट न होने पायें, इस हेतु उन्हें **सुरक्षित रीति से पैक करना, मार्ग में यात्रा के दौरान क्षति न हो इस पर विशेष ध्यान देना** व नष्ट हो जाने की स्थति में **उधार ली गई वस्तुओं का संग्राहक की राय से मूल्य निर्धारित** कर उनका **बीमा करवाना** अत्यन्त आवश्यक प्रकिया के अन्तर्गत आता है।

3. प्रदर्शित वस्तुओं के विषय में **जानकारी दर्शकों को उपलब्ध कराने हेतु नाम–पत्रों** का उपयोग करना चाहिए।

4. अस्थाई प्रदर्शनी आयोजन से सम्बन्धित समस्त **प्रचार कार्य विभिन्न जन–माध्यमों द्वारा सुचारू रूप पहले ही कर लेना चाहिए,** यथा–**स्थानीय समाचार–पत्रों पत्रिकाओं में प्रदर्शनी सम्बन्धी सूचना अथवा आकर्षक विज्ञापन, विभिन्न स्थानों हेतु स्थाई अथवा अस्थाई पोस्टरों का निर्माण, आमन्त्रण–पत्र तथा प्रदर्शनी स्थल पर वितरण** करने हेतु उक्त अस्थाई प्रदर्शनी से सम्बन्धित संक्षिप्त झांकी का प्रकाशन विशेष रूप से करना चाहिए। दर्शकों पत्रकारों आदि के मांगने पर इन्हें अवश्य देना चाहिए।

अस्थाई प्रदर्शनी के आयोजन में उपरोक्त उपायों के अतिरिक्त **कई प्रकार के आधुनिक तकनीकों का यथोचित उपयोग** भी अन्य सहयोगी तत्त्व सिद्ध हो सकते हैं यथा–**आकर्षक रंग–संयोजन, प्रभावोत्पादक प्रकाश–व्यवस्था एवं अन्य आकर्षण प्रदान करने वाले तकनीकों से किसी भी विषय–वस्तु को अधिकाधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।** इस प्रक्रिया में एक मूल बिन्दु विशेष रूप से विचारणीय है कि जिस भी प्रकार की **साज–सज्जा, रंग–संयोजन** आदि किये जाएं वे न तो भड़कीले हों और न ही फूहड़ हों उनमें मर्यादित एवं गाम्भीर्य, रूचिकर प्रदर्शन का समावेश हो।[33]

सचल प्रदर्शनी

स्थाई, अस्थाई प्रदर्शनी के आयोजन से तो सामान्य दर्शक संग्रहालय जाकर ही प्रदर्शित वस्तुओं का अवलोकन कर पाते हैं किन्तु **संग्रहालय क्षेत्र से दूर–दराज़ के क्षेत्रों में रह रहे उन दर्शकों जिन्हें न तो संग्रहालय की जानकारी होती है** और न ही वे उनमें **प्रदर्शित कला–वस्तुओं से परिचित** ही होते हैं, में संग्रहालय सम्बन्धी प्रचार–प्रसार हेतु **'सचल–प्रदशनियों'** के आयोजन की प्रक्रिया भी प्रारम्भ की गई। **इस कार्य हेतु संग्रहालयों द्वारा किसी बस, जीप, वैन, ट्रक अथवा ट्रेन को 'सचल प्रदर्शनी' के उद्देश्य को ध्यान में रखकर, विशेष रूप से निर्माण कराया जाता है,** जिसे अल्प श्रम वहन कर बिना कठिनाई के आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर घुमाया जा सके।

भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता द्वारा आयोजित ***प्रथम भ्रमणशील प्रदर्शनी*** की सफलता पर विचार व्यक्त करते हुए ***संग्रहालयविद् एस.पी. बसु*** ने अपने एक लेख में लिखा है कि **जनता तथा उनकी सांस्कृतिक धरोहरों के मध्य आत्मीय सम्बन्ध स्थापित करने में 'सचल–प्रदर्शनी' अन्य माध्यमों की तुलना में एक प्रभावशाली साधन है जो भारतीय इतिहास का सन्देश दर्शकों के द्वार तक पहुँचाने का कार्य करती है।**[34]

विशिष्ट कथानक के अनुसार चुनी हुई वस्तुओं को **वाहन के मुड़ने वाले शोकेसों, शीशों एवं अन्य उपलब्ध स्थानों में लगाकर वाहन को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते हैं।** शैक्षणिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रकाशन और प्रचार सामग्री, जैसे **सूची पत्र, विस्तृत विवरण, परिचयात्मक पोस्टर छायाचित्र का वितरण जन सामान्य के बीच** किया जाता है। **दृश्य–श्रव्य नामपत्र, माध्यमों फिल्म प्रदर्शन द्वारा दर्शकों को आकर्षित और लाभान्वित किया जा सकता है।** प्रदर्शनी किसी भी प्रकार की हो वह दर्शकों को आकर्षित करने में यदि समर्थ रहती है तो दर्शक स्वतः कुछ न कुछ आनंद और ज्ञान लाभ कर लेते हैं।[35]

कुछ संग्रहालय शैक्षणिक गतिविधियों को विशेष महत्त्व देते हैं। **नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय** अपने **सचल वाहनों** के माध्यम से जहाँ ग्रामीण जनों में **शैक्षणिक कार्यक्रम** सम्पादित करता है वहीं मात्र नई दिल्ली के **स्कूली छात्रों हेतु विद्यालय उधार सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत** पूर्व निर्धारित पाठयक्रम की सूची के अनुसार **डिब्बा बन्द 'किट'** का भी विशेष प्रबन्ध करता है जिसे संग्रहालय वाहनों के जरिए कुछ दिनों के लिए उधार में दिये जाते हैं। इन वितरण सामग्रियों में **वास्तविक प्रदर्शों, माडलों, चार्टों, रंगीन चित्रों तथा शिक्षकों के निर्देशन हेतु एक निर्देशिका (गाइड–बुक) होती है।** यह सेवा संग्रहालय द्वारा पूर्ण रूप से **निःशुल्क** की जाती है।[36]

भारत जैसे ग्राम्य प्रधान देश के लिए सचल–प्रदशनियाँ काफी महत्त्वपूर्ण हैं विशेषकर उस परिस्थिति में जहाँ **एक भी ग्रामीण संग्रहालयों की स्थापना ही न हई हो।** देश के **अधिकांश संग्रहालय शहरों में स्थित** होने के कारण. ग्रामीण समुदाय या तो संग्रहालयों से परिचित नहीं है या अनेक कारणों से वे संग्रहालय नहीं पहुँच पाते। इन्हीं उद्देश्यों के तहत जन–साधारण को संग्रहालय से परिचित कराने हेतु सन् **1969** में **भारतीय संग्रहालय' कलकत्ता** ने **'भारतीय इतिहास एवं पुरातत्त्व'** विषय पर **पहली 'सचल प्रदर्शनी' का प्रबन्ध** किया। सन 1966 से संग्रहालय द्वारा शिक्षण सम्बन्धी अपनाये गए व्यापक कार्यक्रम के सिलसिले में स्थापित विषय–वस्तु के **'समसामयिक परिवर्तन'** के साथ **प्रकाशयुक्त 28 डायोरामाओं** को इस **प्रदर्शनी** में क्रम से रखा गया। **प्रदर्शनी में प्रागैतिहासिक युग से लेकर ऐतिहासिक युग के पुरातत्त्व विषय को उपस्थापित किया गया** एवं प्रत्येक युग के कीर्ति स्तम्भ व मूर्तियों के प्रतिरूपों को उपयुक्त पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत किया गया। **14 अप्रैल 1969** को यह **प्रदर्शनी पश्चिम बंगाल के हुगली जिले** से उद्घाटित हुई व वहाँ के प्रायः सभी जिलों का भ्रमण किया। इसके अतिरिक्त इस प्रदर्शनी को **बिहार उत्तर प्रदेश, नई दिल्ली एवं पंजाब** के कुछ चुने हुए इलाकों में भी दर्शाया गया।[37]

सचल प्रदर्शनियों को प्रायः ***स्टेशन वैगनर, मेटाडोर, ट्रक, स्पेशल ट्रेन, बस आदि*** में इसे सजाते हैं और ऊपर **'सचल प्रदर्शनी'** लिखा होता है। इन वाहनों को एक निश्चित समय तक एक स्थान पर खड़ा रखते हैं। फिर **इसको आगे बढ़ाकर दूसरे गाँव स्टेशन या सार्वजनिक स्थान पर पहुँचते** हैं। ऐसी प्रदर्शनियों की समय–सीमा तथा क्षेत्र सीमा निश्चित रहती है जिसमें इनको घुमाया जाता है।[38] सचल प्रदर्शनियों के द्वारा **देश की सुदूर आन्तरिक जनता से समीप से सम्बन्ध** तो बनाया ही जा सकता है, देश के बाहर **दूसरे देशों की जनता तक भी पहुँचा जा सकता** है। **आधुनिक कला संग्रहालय–न्ययार्क, सचल–वाहनों के माध्यम से जापान. लैटिन. अमेरिका, आस्ट्रेलिया सहित कई देशों के लाखों लोगों** से सम्पर्क करता है। **चल प्रदर्शन** की संख्या तथा प्रकार दोनों दृष्टियों से **अमेरिका सबसे आगे** है।[39]

भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क, चित्रफ़लक के चित्र सं0 7.11 से साभार

हैदराबाद स्थित सालारजंग संग्रहालय अपने **सचल प्रदर्शनियों का आयोजन विभिन्न विद्यालयों बस्तियों** तथा बाह्य जिलों पर निवास करने वाले सुदूर जन–समुदाय के अवलोकनार्थ करता है जो संग्रहालय पहुँचने में प्रायः असमर्थ होते **हैं। जन–अभिरूचि के अनुरूप ही उक्त प्रदर्शनी के विषय निर्धारित किये जाते हैं, यथा–भारतीय मूर्तिकला, भारतीय वास्तुकला, भारतीय चित्रकला का उद्भव, सिक्कों का कालक्रम इत्यादि** विषय इन वाहनों में योजनाबद्ध, क्रमवार व्यवस्थित होते हैं।[40] **(देखिए चित्र : 7.11)**

सचल प्रदर्शनियों को लोकप्रिय बनाने हेतु यान में प्रदर्शित **सामग्रियों को निजी संग्राहकों अथवा संस्थानों से भी उधार** में लिए जा सकते हैं जिनमें अलंकरण युक्त विषय वस्तुओं के साथ–साथ चित्रित सामग्रियों **(ग्राफिक आर्टस)** दोनों का ही समावेश होता है। इस कार्य में ***लंदन*** स्थित ***'विक्टोरिया अलबर्ट संग्रहालय'*** तथा ***ग्रेट ब्रिटेन की कला परिषद् का सचल विभाग*** अपने देश में **सचल–प्रदर्शनियों** हेतु संग्रहालयों को **कला–वस्तुएँ उधार** में देते हैं।[41]

इनके अतिरिक्त सचल प्रदर्शनियों के आयोजन में **'राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद'** के अन्तर्गत देश में स्थापित विभिन्न **विज्ञान संग्रहालय** अपनी **आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों को भ्रमणशील वाहनों द्वारा जन–जन तक पहुँचाने में उपयोगी भूमिका निभा रहे** हैं। सन् **1979–80** से ही ***'राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद'*** द्वारा ***'सचल विज्ञान प्रदर्शनी'*** का शुभारम्भ किया जा चुका है। **विज्ञान की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों को ग्रामीण समुदाय** के द्वार तक पहुँचाने हेतु एक विशेष प्रकार की **सचल इकाई** का निर्माण किया गया। इस हेतु **24 अथवा 28 कार्य–शील प्रदर्श** जन साधारण के जीवन से सम्बद्ध विभिन्न योजना के अन्तर्गत बनाये गए थे। इन **सुसज्जित सचल वाहनों** को प्रत्येक चयनित स्थल पर 3 से 5 दिन तक पूर्व निर्धारित **कार्यक्रम के अनुसार** प्रदर्शित किया जाता है।[42]

राज्य संग्रहालय, लखनऊ के पास **इस कार्य हेतु निजी वाहन के रूप में एक मेटाडोर है** जिसके माध्यम से **प्रदर्शों को कभी–कभी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा शहर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदर्शन हेतु ले जाया जाता** है। **इस**

हेतु विषय–वस्तु का चयन संग्रहालय स्वयं करता है। कभी–कभी मांग किये जाने पर भी **संग्रहालय प्रदर्शनी** का आयोजन **निःशुल्क** करता है।

सचल–प्रदर्शनी के आयोजन की योजना से पूर्व निम्न बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए–

1. **जिस क्षेत्र में प्रदर्शनी ले जाना** निश्चित किया जाय, **उस क्षेत्र की जनता के बारे में उनकी आवश्यकता, रूचि, विचारधारा, शैक्षणिक स्तर, कला–कौशल में उनकी अभिरूचि** आदि के विषय में प्रदर्शनी आयोजन से पूर्व पूरी जानकारी कर लेना आवश्यक है।
2. प्रदर्शित वस्तुओं की जानकारी **दर्शकों को कराने हेतु नाम–पत्रों का उपयोग,** प्रदर्शन क्षेत्र की जनता के समझ के अनुरूप करना चाहिए।
3. जन–सामान्य को **प्रदर्शनी के महत्व एवं प्रदर्शों की विस्तृत उपयोगी जानकारी** सहज ढंग से **बताने हेतु सक्षम संग्रहालयकर्मी** को भी जाना चाहिए। प्रयास यह होना चाहिए कि ये **कार्यकर्ता उक्त निर्धारित क्षेत्र की जनता के परिवेश से भली–भांति परिचित हों और उन्हीं की भाषा में उन्हें व्यवस्थित ढंग से विषय–वस्तु की जानकारी** कुशलता से प्रदान कर सकने में सक्षम हों। उनकी **जिज्ञासाओं, प्रश्नो आदि का समाधान उनके स्तर** से ही करना चाहिए।
4. संग्रहालयों को इस प्रकार की ***'सचल–प्रदर्शनी'*** के आयोजन से **सम्बन्धित समस्त प्रचार सामग्री क्षेत्र की जनता में सचल–यान के आगमन से पूर्व ही वितरित कर देना चाहिए।** स्थानीय **समाचार–पत्रों** में इस प्रकार के **कार्यक्रम आयोजन को सूचित अथवा विज्ञापित करा देना** चाहिए। **स्थानीय पत्रकारों** को भी इस अवसर पर **आमन्त्रित** कर उनका सहयोग प्राप्त करन चाहिए।
5. **प्रदर्शनी समाप्ति के पश्चात** जिन–जिन **व्यक्तियों व स्रोतों का सहयोग प्राप्त हुआ हो,** उन सबका **धन्यवाद ज्ञापन संग्रहालय कर्मियों** को अवश्य करना चाहिए।

प्रदर्शनी के नाते **आस–पास के इलाकों में** उपयुक्त **प्रचार कार्य होना** आवश्यक है।[43]

जन–सम्पर्क की दृष्टि से संग्रहालयों को इन **सचल–प्रदर्शनियों** का **आयोजन न केवल निःशुल्क व स्वयं से करना उपयोगी होता है, बल्कि ऐसे शक्तिशाली सचल साधनों के जरिए बिना शर्त जन–जन तक पहुँचने की हर सम्भव कोशिश भी की जानी चाहिए,** तभी इन सचल–वाहनों की उपयोगिता सही रूप में सार्थक होगी, क्योंकि **संग्रहालयों को जन सेवा व जन–शिक्षा के अपने निर्धारित उद्देश्य हेतु** ही उन तक पहुँचना होता है। इनके द्वारा ही जनता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित होता है तथा जन–समुदाय के **विचारों से संग्रहालयकर्मी** से अवगत होते हैं जिससे उनके **प्रश्नों जिज्ञासाओं** का **समाधान किया जा** सके।

सचल प्रदर्शनियाँ एक प्रकार से समाज़ को एक सूत्र में पिरोने के लिए दूर–दूर तक की यात्राएं करती हैं। अपने इन्हीं प्रयासों के द्वारा ये **प्रदर्शनियाँ, कला एवं संस्कृति से सम्बन्धित तथ्यों से आम जनमानस** को अवगत कराती हैं साथ ही महत्वपूर्ण **प्रदर्शों के माध्यम से उनके समक्ष अतीत का एक आभासी चित्र प्रस्तुत करती हैं।** प्रायः ऐसी प्रदर्शनियों को देख़कर जन–मानस में कौतूहल एवं प्रदर्श को जानने के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि **सभी प्रकार की प्रदर्शिनों के आयोजन में संग्रहाध्यक्ष, संग्रहपाल, वीथिका सहायक, रूपसज्जाकार आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है।** प्रदर्शिनी लगाने से पहले जो योजना बनाई जाती है उसमें **स्थान का चयन, प्रकाश व्यवस्था, शो–केस निर्माण, नाम–पत्र निर्माण आदि कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण हो** जाते हैं। **स्थाई प्रदर्शनियाँ व्यवस्थित रूप से एक जगह लगाई** जाती हैं जिनमें प्रायः **नवीन प्राप्त प्रदर्शों अथवा कलावस्तुओं को प्रदर्शित किया जाता है।** कभी–कभी **विदेशों से मंगाई गई दुर्लभ कलाकृति भी ऐसी प्रदर्शनियों** में प्रदर्शित की जाती हैं। **अस्थाई प्रदर्शनियों** का आयोज़न प्रायः **संग्रहालय में सुरक्षित रख़ी हुई द्वितीय श्रेणी की कलाकृतियों के प्रदर्शन के लिए किया जाता है।** विद्वानों का मानना है कि ***सचल प्रकार की प्रदर्शनियाँ निकट भविष्य में और अधिक उपयोगी सिद्ध होने वाली हैं क्योंकि इसके माध्यम से जनसम्पर्क दूर–दराज़ के दुर्गम क्षेत्रों में भी सुगम हो रहा है।*** कभी–कभी तो अनेक राज्यों के महत्वपूर्ण संदर्भों की झांकियाँ भी सचल प्रदर्शनी का कार्य कर देती हैं। इस प्रकार **प्रदर्शनियाँ, संग्रहालय प्रबन्धन एवं जनसम्पर्क** का एक **अभिन्न अंग सिद्ध** होती हैं।

शोध–पत्र में प्रदर्शन करने के प्रकारों से लेकर **प्रदर्शों को व्यस्थित रूप से प्रदर्शित** करने तक के लगभग **समस्त पक्षों पर प्रकाश डालने का प्रयास** किया गया है। यथा–सम्भव चित्रों के प्रदर्शन के माध्यम से बातों को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया गया है। ***इस शोध–कार्य से संग्रहालय विज्ञान के क्षेत्र विशेष रूप से प्रदर्शनी के प्रकारों एवं उनके कार्यों पर कार्य करने वाले विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को सहयोग मिलने की पूर्ण सम्भावना है।***

सन्दर्भ सूची

1. आर. गणेशन्, ***भारतीय संग्रहालय एवं जनसम्पर्क,*** विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2002, पृ. 70
2. शिवस्वरूप सहाय, ***संग्रहालय की ओर,*** मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2019, पृ. 187
3. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 71–73
4. एम. एल. निगम, ***फन्डामेन्टल्स ऑफ म्यूजियोलॉजी,*** देवा प्रकाशन, हैदराबाद, 1985, पृ. 99
5. सत्य प्रकाश, ***म्यूजियम एण्ड सोसाइटी,*** यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, बड़ोदा, 1964 पृ. 34
6. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 74
7. ***वही,*** पृ. 75
8. एम. एल., निगम ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 97
9. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 72–73
10. मोर्ले ग्रेस, ***इंस्टालेशन ऑफ एक्जीबीसन्स फॉर एजुकेशन,*** म्यूजियम वाल्यूम 5, नं.2, 1952, पृ. 91
11. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 79–80
12. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 85
13. अरविन्द कुमार सिंह, ***संग्रहालय विज्ञान,*** मध्यपदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, (प्रथम संस्करण), 2003, पृ. 193–95
14. मोलें ग्रेस, ***इंस्टालेशन ऑफ एक्जीवीसन्स फॉर एजुकेशन,*** म्यूजियम वाल्यूम 5, नं.2, 1952 पृ. 94
15. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 80

16. अरविन्द कुमार सिंह, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 192
17. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 80–81
18. ***वही,*** पृ. 82
19. राय चौधरी डी. तथा अन्य, ***संग्रहालय अनुशीलन,*** हिन्दी पुस्तक भण्डार, दिल्ली, 1965, पृ. 62
20. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 81–82
21. डी. राय चौधरी, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 62
22. अरविन्द कुमार सिंह, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 192–93
23. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 83
24. वी. पी., द्विवेदी सम्पा. ***म्यूजियम्स् एण्ड म्यूजियोलॉजी,*** न्यू होराइजन, 1980, पृ. 7
25. अरविन्द कुमार सिंह, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 196
26. शिवस्वरूप सहाय, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 187
27. एम. एल., निगम, ***पूर्वोद्धृत,*** 1985 , पृ. 116
28. एम. एल., निगम, ***आन रिचिंग द कम्युनिटी–सालारजंग म्यूजियम हैदराबाद,*** लेख म्यूजियम (यूनेस्को) नं. 155 (वॉल्यूम 39), 1997, पृ. 141
29. आर. गणेशन्, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 89
30. ***वही,*** पृ. 90
31. ***वही,*** पृ. 90–92
32. ***परिचयात्मक लघु पुस्तिका,*** राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय–नई दिल्ली
33. निगम एम. एल., ***पूर्वोद्धृत,*** 1985, पृ. 117
34. एस. पी. बसु, ***मोबाइल इक्विजिशन आन इण्डिया,*** लेख, हिस्ट्री एण्ड आर्कियोजॉजी इण्डियन म्यजियम बुलेटिन, जनवरी 197 7, पृ. 8.
35. अरविन्द कुमार सिंह, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 197
36. ***फोल्डर स्कूल लोन सर्विस,*** राष्ट्रीय प्रकृति विज्ञान संग्रहालय, नई दिल्ली
37. ***फोल्डर (सचल प्रदर्शनी),*** भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता
38. शिवस्वरूप सहाय, ***पूर्वोद्धृत,*** पृ. 188
39. हडसन केनिथ, ***म्यूजियम्स फार द 1980 स–ए सर्वे ऑफ ए वर्ल्ड ट्रेन्डस,*** 1977 पृ. 119.
40. निगम एम. एल., ***आन रिचिंग द कम्यूनिटी सालारजंग म्यजियम हैदराबाद,*** लेख : म्यूजियम (यूनेस्को) नं. 1 55 (वॉल्यूम 39), 1997, पृ. 142
41. निगम एम. एल., ***पूर्वोद्धृत,*** 1985, पृ. 117.
42. ***वार्षिक प्रतिवेदन,*** राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद्, 1978–79, पृ. 13.
43. ***फोल्डर (सचल प्रदर्शनी),*** भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता से